पाठ – ०३ संवादहीन (शेखर जोशी)

खंड 1: ताई का अकेलापन और मिट्ठू का आगमन

कठिन शब्दार्थ

- **सूने खंडहर:** उजाड़, निर्जन या खाली पड़ा हुआ पुराना मकान
- **गाय-ढोर:** गाय और अन्य पालतू मवेशी या चौपाए
- **जून:** समय, वक्त या भोजन की वेला (दो जून = सुबह-शाम का भोजन)
- **भाँय-भाँय करना:** अत्यधिक सूनापन या सन्नाटे के कारण होने वाला डरावना अहसास
- **ममता:** माँ का स्वाभाविक प्रेम, आत्मीयता या गहरा लगाव

सरल व्याख्या

'संवादहीन' कहानी के इस प्रारंभिक अंश में कथाकार शेखर जोशी जी ने ग्रामीण समाज में बुजुर्गों के अकेलेपन और पलायन की कड़वी सच्चाई को रेखांकित किया है। गाँव के एक विशाल और कभी वैभवशाली रहे 'बड़े घर' में अब केवल ताई नामक वृद्ध स्त्री अकेली रहती हैं। ताई ने अपने जीवन में सुख-समृद्धि के दिन देखे थे, जब घर में भरा-पूरा परिवार, बच्चे, नौकर और गाय-पशु थे। परंतु समय के चक्र के साथ बहू-बेटे गाँव छोड़कर शहरों में बस गए और बेटियाँ ब्याह कर अपनी गृहस्थी में व्यस्त हो गईं। सब कुछ समाप्त हो जाने के बाद ताई के लिए पेट पालना बड़ी समस्या नहीं था, वे एक वक्त चूल्हा फूँककर या व्रत रखकर दिन काट लेती थीं, परंतु घर का भयानक सन्नाटा उन्हें काटने को दौड़ता था।

ताई के इस असहाय सूनेपन को दूर करने के लिए गनपत नामक व्यक्ति न जाने कहाँ से एक प्यारा पहाड़ी तोता ले आया, जिसका नाम 'मिट्ठू' रखा गया। मिट्ठू के आते ही ताई की सोई हुई ममता जाग उठी। जो ताई अपने लिए भोजन बनाने में आलस्य करती थीं, वे अब नियमपूर्वक मिट्ठू के लिए दाल-भात बनाने लगीं और उसके लिए आस-पास के बगीचों से हरी मिर्च और अमरूदों का प्रबंध करने लगीं। मिट्ठू भी एक कुशाग्र बुद्धि छात्र की तरह ताई द्वारा सिखाए गए 'राम-राम', 'सीताराम' जैसे शब्दों को हुबहू सीख गया और वक्त-बेवक्त उनके सवालों के सटीक उत्तर देने लगा, जिससे घर का सूनापन रौनक में बदल गया।

खंड 2: ताई-मिट्ठू का आत्मीय संवाद और प्रयाग प्रस्थान का धर्मसंकट

कठिन शब्दार्थ

- **पौ फटना:** प्रातःकाल का सूर्योदय होना, तड़का होना
- **अचकचाकर उठना:** चौंककर या अचानक हड़बड़ाकर जाग जाना
- **निहाल होना:** अत्यधिक प्रसन्न, तृप्त या गद्गद हो जाना

- **तुनकमिजाजी:** छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ने या नाराज़ होने का स्वभाव
- **पशोपेश:** असमंजस, दुविधा या निर्णय न ले पाने की स्थिति

सरल व्याख्या

इस अंश में ताई और मिट्ठू के बीच के मधुर और आत्मीय संबंधों का सजीव चित्रण है। रोज़ सुबह पौ फटते ही मिट्ठू 'हर-हर गंगे' और 'सीताराम' की रट लगाकर ताई को लाड़ से जगाता था और ताई उसे 'जुग-जुग जियो' का आशीर्वाद देती थीं। दोपहर के सन्नाटे में जब ताई थककर बैठतीं, तो वे मिट्ठू से पूछतीं, "अब कैसे कटेगी?" और मिट्ठू बड़े विश्वास से कहता, "कटेगी! कटेगी!" इसके बाद ताई उसे अपने बीते दिनों के वैभव की कहानियाँ सुनातीं—जमींदार साहब का रोब, हाथी-घोड़े, दरबार की रौनक और पुरानी शादियाँ। मिट्ठू गर्दन टेढ़ी करके एक सच्चे मित्र की तरह उनकी बातें सुनता था। कभी-कभी दोनों में नोक-झोंक भी होती; मिट्ठू कटोरियाँ उलट देता और ताई के डाँटने पर 'मर जा' का जवाब 'मर जा' से देता, पर जल्द ही मान-मनौवल से दोनों फिर एक हो जाते।

ताई को मिट्ठू का वियोग एक पल के लिए भी सहन नहीं था। परंतु जीवन के अंतिम पड़ाव में ताई के मन में परलोक सुधारने और कुंभ-स्नान के लिए प्रयागराज जाने की तीव्र इच्छा जागी। अब उनके सामने बड़ा धर्मसंकट था कि मिट्ठू का क्या होगा? कुछ लोगों ने हँसी में उसे साथ ले जाने या उसका टिकट कटाने की बात कही, पर भीड़ में उसकी सुरक्षा को लेकर ताई पशोपेश में थीं। अंततः पड़ोस के जगन मास्टर की पत्नी (मास्टराइन) ने ताई के लौटने तक मिट्ठू की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी ले ली, जिसके बाद ताई भारी मन और आँसुओं के साथ मिट्ठू को छोड़कर कुंभ-स्नान के लिए प्रस्थान कर गईं।

खंड 3: जगन मास्टर का आदर्श और मिट्ठू की अनपेक्षित फरारी

कठिन शब्दार्थ

- **प्रायश्चित:** अपने द्वारा की गई किसी भूल या पाप का मार्जन करने का धार्मिक/नैतिक कर्म
- **सहज कौतूहलवश:** स्वाभाविक उत्सुकता या अचंभा होने के कारण
- **मशगूल:** किसी कार्य या शगल में पूरी तरह लीन या व्यस्त होना
- **एवजी:** किसी के स्थान पर अस्थाई रूप से काम करने वाला, स्थानापन्न
- **आग्नेय दृष्टि:** अत्यधिक क्रोध से भरी, आग उगलती हुई आँखों से देखना

सरल व्याख्या

ताई के जाने के बाद जगन मास्टर के घर में एक नया वैचारिक द्वंद्व शुरू हो गया। जगन मास्टर स्वतंत्र और उच्च आदर्शों वाले व्यक्ति थे, जिन्हें किसी भी मूक पक्षी को पिंजरे में कैद देखना मानसिक यातना जैसा प्रतीत होता था। अपनी पत्नी द्वारा तोते की ज़िम्मेदारी लेने पर वे दुखी थे और तोते को कैद में देखकर स्वयं को पापी महसूस कर रहे थे। अपने इस मानसिक बोझ को कम करने और प्रायश्चित करने के लिए उन्होंने एक दिन कमरा बंद किया और मिट्ठू के

पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया। मिट्ठू शुरुआत में कैद का आदी होने के कारण बाहर नहीं आया, परंतु जगन मास्टर द्वारा दाने बिखेरने पर वह धीरे-धीरे बाहर आकर पिंजरे की छत पर बैठ गया। तीन-चार दिन तक यह क्रम सुचारू रूप से चलता रहा।

परंतु एक दिन, सहज कौतूहलवश मिट्ठू की नज़र कमरे के खुले रोशनदान पर पड़ गई और वह उड़कर वहाँ बैठ गया। जगन मास्टर ने उसे दाने का लालच देकर रोकने का प्रयास किया, परंतु मिट्ठू ने बाहर की खुली और आज़ाद दुनिया को देखा और पंख फड़फड़ाते हुए रोशनदान से बाहर उड़ गया। मिट्ठू के उड़ते ही आदर्शवादी जगन मास्टर के होश उड़ गए (हाथों के तोते उड़ गए)। वे अपनी धोती सँभालते हुए बाग में 'मिट्ठू आ! मिट्ठू आ!' पुकारते हुए पसीना-पसीना होते रहे, परंतु मिट्ठू आज़ाद होकर डाल-डाल पर अपनी स्वतंत्रता का आनंद ले रहा था। ताई के लौटने का समय निकट देखकर पूरे गाँव में आशंका फैल गई, क्योंकि ताई का क्रोधी स्वभाव और मिट्ठू के प्रति लगाव जगज़ाहिर था। इस संकट से बचने के लिए गनपत ने हुबहू मिट्ठू जैसी शक्ल का एक दूसरा तोता लाकर पिंजरे में रख दिया ताकि ताई को भ्रम में रखा जा सके। जगन मास्टर अब दिन-रात उस नए तोते को 'राम-राम सीताराम' रटाने के कठिन काम में जुट गए, ताकि ताई को शक न हो, पर वह नया तोता केवल टुकुर-टुकुर देखता रहा।

खंड 4: ताई की वापसी और 'संवादहीन' यथार्थ

कठिन शब्दार्थ

- **गुहार करना:** पुकारना, आवाज़ लगाना या सहायता के लिए बुलाना
- **अमराइयाँ:** आम के घने बाग या वृक्षों का समूह
- **टुकुर-टुकुर देखना:** बिना पलक झपकाए लगातार अचरज या शांति से देखना

सरल व्याख्या

कहानी के अंतिम मार्मिक अंश में ताई कुंभ-स्नान का पुण्य कमाकर वापस गाँव लौटती हैं। वे अपने घर जाने के बजाय सीधे जगन मास्टर के घर पहुँचती हैं, क्योंकि उनका हृदय अपने प्रिय मिट्ठू से मिलने के लिए व्याकुल था। ताई को पूरा विश्वास था कि उनकी आवाज़ सुनते ही मिट्ठू हमेशा की तरह पिंजरे में कूद-फाँद मचा देगा, पंख फड़फड़ाकर 'राम-राम सीताराम' की रट लगाएगा और पूरा आसमान सिर पर उठा लेगा।

परंतु जैसे ही वे पिंजरे के निकट जाती हैं, वहाँ बैठा 'एवजी तोता' (नया तोता) उन्हें देखकर कोई प्रतिक्रिया नहीं करता। वह केवल अनजाने भाव से इधर-उधर टुकुर-टुकुर देखता रहता है और पूरी तरह मौन रहता है। ताई उसे बार-बार पुकारती हैं, गुहार करती हैं, लाड़ दिखाती हैं, परंतु उस नए पक्षी के पास ताई के लिए कोई शब्द नहीं हैं। वह तोता पूरी तरह 'संवादहीन' बना रहता है। ताई का पुराना आत्मीय मिट्ठू तो न जाने किन दूर अमराइयों में स्वतंत्र उड़ चुका था। अंततः, ताई के जीवन में वह आत्मीय संवाद हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है और केवल एक गहरा, सूना सन्नाटा शेष रह जाता है।